प्रथमावृत्ति

मूल्य

॥=)



श्रीरामकिशोर गुप्त द्वारा साहित्य प्रेस,
चिरगाँव (झाँसी) में मुद्रित,
तथा साहित्य-सदन, चिरगाँव (झाँसी)
द्वारा प्रकाशित ।

FOREWORD

Good wine needs no bush, and a translation of Bhasa's masterpiece by one of the foremost Hindi poets of our time should be sure of a welcome from critics and the public alike. The translator has skilfully reproduced, in his literal but graceful rendering, the studied simplicity of his original, in which every word tells, every phrase has its dramatic significance, while the whole (so artfully is its art concealed) has the appearance of artless nature and reality. It is to be hoped that this translation will bring Vasavadatta (as human a heroine as any of Euripides' creations) back 'like Alcestis from the grave' to live again upon the stage. If it does, its influence on the future of the Indian drama is incalculable.

A. G. Shirreff

श्रीरामः

आवेदन

अपने मित्रों के अनुग्रह और सहयोग से भास के इस अपूर्व नाटक के अनुवाद में अपने आपको निमित्त मान कर मैं अपना सौभाग्य समझता हूँ। संकोच इतना ही है कि अपनी अज्ञता के कारण मुझसे अनेक त्रुटियाँ रह गई होंगी। परन्तु इसे पढ़ कर यदि पाठकों को उक्त महाकवि की शक्ति का थोड़ा भी परिचय प्राप्त हो गया तो मैं अपने को कृतकृत्य समझूँगा।

स्वप्नवासवदत्ता के अँगरेज़ी अनुवादकर्त्ता श्रीयुक्त ए० जी० शिरेफ (आई० सी० एस०) ने इस हिन्दी अनुवाद को देख कर अनेक उपयोगी सूचनाएँ देने की कृपा की है और भूमिका लिख कर इसका गौरव बढ़ाया है, इसके लिए मैं उनके प्रति अपनी हार्दिक कृतज्ञता प्रकट करता हूँ।

मैथिलीशरण गुप्त.

संशोधन

पृष्ठ	पंक्ति	के स्थान पर	पढ़िए
५	२१	1299	1923
९	११	the philosphers	doctors
३१	१	साथ विवाह	साथ अपने पुत्र के विवाह
४९	६	वधू	पुत्रवधू
५०	७	....	(स्वगत)
५०	७	यह भी	यह जन भी
५३	७	शुम	शुभ
८१	१८	सदय	चतुर
८२	१	सदय	चतुर

प्राक्कथन

आज से सत्तरह वर्ष पूर्व संस्कृत-विद्वानों के निकट भास का नाममात्र सुना जाता था। उनके काव्य-ग्रन्थ कभी उपलब्ध होंगे या नहीं यह कोई नहीं जानता था। केवल विविध संस्कृत काव्य और नाटकों में उनका नामोल्लेख देखकर अनुमान किया जाता था कि प्राचीन काल में भास नाम के कोई एक श्रेष्ठ नाटककार हो गये हैं। पाणिनि कृत 'पातालविजय' का जिस प्रकार नाममात्र सुना जाता है, वही अवस्था भास के नाटकों की भी थी। वररुचि कृत "कण्ठाभरण" काव्य की भी यही दशा है। 'जाम्बवती विजय' काव्य की भी संज्ञा मात्र वर्त्तमान है। गुणाढ्य कवि रचित 'बृहत् कथा' नामक ग्रन्थ का बहुत थोड़ा अंश प्राप्त है। 'प्रसन्नराघव नाटक' में कविता कामिनी के विभिन्न

लीला-हावों के प्रति-रूप स्वरूप अनेक कवियों का नामोल्लेख किया गया है, इस प्रसङ्ग में हम भास का नाम पाते हैं—

यस्या श्चोरश्चकुरनिकरः कर्णपूरोमयूरो,
भासो हासः कविकुलगुरुः कालिदासो विलासः।
हर्षो हर्षो हृदयवसतिः पंचवाणस्तु वाणः
केषां नैषा कथय कविता-कामिनी कौतुकाय ॥

सप्तम शताब्दी के महाकवि बाणभट्ट के हर्ष-चरित्र में भी भास का उल्लेख है—

सूत्रधारकृतारम्भैर्नाटकैर्बहुभूमिकैः।
सपताकैर्यशोलेभे भासो देवकुलैरिव ॥

इसके अतिरिक्त वाक्पति (ई० अष्टम शताब्दी) राजशेखर (ई० दशम शताब्दी) भामह (ई० अष्टम शताब्दी) वामन (ई० अष्टम शताब्दी) और अभिनव-गुप्त (ई० ग्यारहवीं शताब्दी) ने भी भास का नामोल्लेख किया है। इनमें से किसी किसी ने उनकी किसी किसी पुस्तक (स्वप्नवासवदत्ता और चारुदत्त) का भी नाम लिया है। शूद्रक प्रणीत जो मृच्छकटिक नाटक अब तक संस्कृत साहित्य का सर्व प्रथम नाटक माना जाता था वह अब भास के चारुदत्त नाटक का नया और परिवर्द्धित संस्करण मात्र

सिद्ध हुआ है। भामह ने उनके प्रतिज्ञा यौगंधरायण की तीव्र आलोचना की है। और स्वयं कविकुलगुरु कालिदास रचित मालविकाग्निमित्र नाटक की प्रस्तावना में पारिपार्श्विक सूत्रधार से कहता है "प्रथितयशसां भाससौमिल्ल कविपुत्रादीनां प्रबंधानतिक्रम्य वर्त्तमानकवेः कालिदासस्यकृतौ किंकृतोबहुमानः।

इसका उत्तर सूत्रधार ने वहाँ इस प्रकार दिया है—

पुराणमित्येव न साधु सर्वं
न चापि काव्यं नवमित्यवद्यम्।

इससे स्पष्ट है कि भास कोई साधारण कवि या नाटककार नहीं थे।

सन् १९१२ में त्रावनकोर के पण्डित प्रवर महा-महोपाध्याय गणपति शास्त्री ने इन्हीं महाकवि भास के १२ नाटकों का उद्धार तथा प्रकाशन करके साहित्य, इतिहास और पुरातत्व जगत में एक हलचल मचा दी। इसके पहले इन सब नाटकों को देखना तो दूर रहा किसी ने इनका नाम भी नहीं सुना था। कौन जानता था कि वे कभी देखने को मिलेंगे! किसे अनुमान था कि राजशेखर की यह बात—

भासनाटकचक्रेऽपिच्छेकैः क्षिप्ते परीक्षितुम्।
स्वप्नवासवदत्तस्य दाहकोऽभून्न पावकः॥

भास के नाटकों की स्वर्ण-परीक्षा मात्र है। स्वप्न-वासवदत्ता परीक्षा में खरा उतरा। वह अग्नि में नहीं जला। किन्तु उसके साथ अन्य साधारण नाटक भी काल सागर में डूबने से बच गये यह हमारा सौभाग्य है और इनकी खोज का वृत्तान्त पुरातत्व के इतिहास में स्वर्णाक्षरों से लिखे जाने योग्य है!

उन तेरह नाटकों के नाम इस प्रकार हैं:—(१) स्वप्नवासवदत्ता (२) प्रतिज्ञायौगंधरायण (३) पंच-रात्र (४) चारुदत्त (५) दूतघटोत्कच (६) अविमारक (७) बालचरित (८) मध्यम-व्यायोग (९) कर्णभार (१०) ऊरुभंग (११) अभिषेक (१२) प्रतिमा और (१३) दूतवाक्य।

शास्त्रीजी की इस खोज से पश्चिम की आँखें चौंधिया गई थीं। अनेक पाश्चात्य विद्वान तो यहाँ तक कह उठे थे कि ये नाटक भास की रचना नहीं हैं *। किन्तु सूर्य क्या हथेली से ढका जा सकता है? रचना-नैपुण्य, कथा वस्तु का अद्भुत विकास, भाषा

---

*'The anonymous plays found by Ganapati Sastri are not the works of Bhasa, but were written by some unknown author

की सरलता और माधुर्य से शीघ्र ही प्रमाणित हो गया कि ये नाटक निश्चय ही किसी महा-कवि की प्रखर प्रतिभा का फल हैं।

कवि ने इन नाटकों में अपना नाम नहीं दिया। इसलिए कुछ लोगों ने प्रश्न उठाया कि ये सब ग्रन्थ भास प्रणीत हैं, इसका प्रमाण क्या है? शास्त्री जी ने निज सम्पादित स्वप्नवासवदत्ता की भूमिका में इस प्रश्न पर यथेष्ट प्रकाश डालने का प्रयत्न किया है। उन्होंने बताया है कि नाटकों की कुछ विशेषताओं, तथा उनका रचना सादृश्य, भाषा विन्यास इत्यादि पर विचार करने से पता चलता है कि इन सबका रचयिता एक ही कवि है। यहाँ तक कि कुछ वाक्य और श्लोकों को ज्यों का त्यों विभिन्न नाटकों में स्थान मिला है। इस स्थान पर उनके उदाहरण देकर हम व्यर्थ में लेख का कलेवर नहीं बढ़ाना चाहते।

भास कौन थे, कहाँ के निवासी थे, वे किस राजा को राज-सभा को सुशोभित करते थे, इत्यादि प्रश्नों के

---

or authors of the 7th Century.........'

Barnett's opinion quoted by Prof. Winternitz in his readership lecture delivered at the Calcutta University—16th Sep 1299.

सम्बन्ध में पण्डितों में बड़ा मत भेद है। वन्द्यघटीय सर्वानन्द के अमरकोषटीकासर्वस्व, अभिनवगुप्त की भरत-नाट्यवेदविवृति, दंडी के काव्यादर्श, वामन के ध्वन्यालोक और काव्यालंकारसूत्रवृत्ति, विश्वनाथ के साहित्यदर्पण, भामह के काव्यालंकार, गुणाढ्य की बृहत्कथा, विष्णुगुप्त के कौटिल्य अर्थशास्त्र इत्यादि में भास के नाटकों का उल्लेख देखकर शास्त्री जी ने अनुमान लगाया है कि वे ईसा से पूर्व पाँचवीं या छठीं शताब्दी के आस पास के व्यक्ति थे। चाणक्य प्रणीत अर्थ-शास्त्र में भास के प्रतिज्ञायौगंधरायण नाटक का एक श्लोक ज्यों का त्यों उद्धृत है। चाणक्य ईसा के पूर्व चौथी शताब्दी के व्यक्ति थे यह एक प्रकार से सिद्ध हो चुका है। फलतः भास ईसा के पूर्व चौथी शताब्दी से भी पूर्व हुए यह कहना असंगत न होगा।

शास्त्रीजी ने भास विरचित प्रतिमा नाटक की एक विस्तृत भूमिका में उन्हें पाणिनि से पूर्व का सिद्ध किया है। उनके कथनानुसार प्रचलित भरत मुनि का नाट्यशास्त्र भास के समय तक तैयार नहीं हुआ था क्योंकि भास ने अपने नाटकों में अनेक स्थलों पर नाट्य-शास्त्र के नियमों का उल्लंघन किया है। किन्तु साथ ही 'भरत वाक्य' पद में भरत का नाम भी अधिकांश

नाटकों में आया है। शास्त्री जी इसका उत्तर यह देते हैं कि संभव है उस समय भरत मुनि प्रणीत कोई दूसरा और प्रचलित नाट्यशास्त्र से भिन्न नाट्यशास्त्र मौजूद हो।

किन्तु स्वर्गीय साहित्याचार्य पाण्डेय रामावतार शर्मा एम० ए० की राय इससे भिन्न थी। वे इन तेरहों नाटकों को पांड्याधिप राजसिंह के सभापण्डित किसी केरल कवि की रचना बताते हैं। यह राजसिंह राजशेखर का शिष्य और कन्नौज के राजा महेन्द्रपाल का समकालीन था। इस प्रकार शर्माजी के मत से इन नाटकों की रचना ईसा की नवीं शताब्दी में हुई। वंग भाषा के प्रसिद्ध लेखक तथा बैरिस्टर श्री० प्रमथनाथ चौधरी एम० ए० और पुरातत्व के अगाढ़ पण्डित श्रीकाशीप्रसाद जायसवाल एम० ए० ने भास को शर्माजी की अपेक्षा कुछ अधिक प्राचीन माना है। इनकी सम्मति में महाकवि भास काण्व वंश के तृतीय राजा नारायण की सभा के कवि थे। अविमारक नाटक के मंगलाचरण और मध्यम व्यायोग के भरत वाक्य में नारायण तथा उपेन्द्र शब्द इसी नारायण की स्तुति में लिखे गये हैं। श्री सारदारंजन राय एम० ए० ने श्रीयुक्त चौधरी और श्री० जायसवाल

के इस मत का खण्डन करके भास को ईसा के ३०० वर्ष पूर्व से भी अधिक पहले का व्यक्ति माना है। इधर प्रसिद्ध विद्वान श्रीयुक्त टी०एल० वेंकटरमणजी शास्त्री जी के मत का समर्थन करते हैं। संस्कृत के विद्वान तथा स्वप्नवासवदत्ता के गुजराती अनुवादक श्री केशवलाल हर्षदराय ध्रुव भास को आदि शुंग पुष्य-मित्र की राज-सभा का पण्डित तथा पतञ्जलि का समकालीन मानते हैं। उन्होंने अपने इस मत के समर्थन में यथेष्ट प्रमाण भी दिये हैं। वंगभाषा के लेखक श्रीअशोकनाथ भट्टाचार्य का मत श्रीकेशवलाल हर्षदराय के मत से मिलता है। उन्होंने भास को अश्वघोष की अपेक्षा प्राचीन तथा पतंजलि का समकालीन माना है।

यह निश्चय है कि भास कालिदास के पूर्व हुए, क्योंकि कवि ने अपने मालविकाग्निमित्र नाटक में, जैसा कि हम लिख चुके हैं, विशेष सम्मान के साथ उनका स्मरण किया है, साथ ही उनको शकुन्तला के अनेक स्थलों पर भास के नाटकों की छाया भी पड़ी है।

कालिदास को कुछ लोग ईसा की पाँचवीं शताब्दी का न मान कर ईसा के पूर्व की प्रथम शताब्दी के

मध्य-भाग का मानते हैं* । ऐसो अवस्था में यदि भास को उनसे एक शताब्दी पहले रक्खा जावे तो हम कह सकते हैं कि वे ईसा के पूर्व दूसरी शताब्दी के व्यक्ति थे । किन्तु पाश्चात्य पण्डितों का मत इससे भिन्न है। वे भास को अश्वघोष और कालिदास के बीच में रखना चाहते हैं । उनके मत से कालिदास पाँचवीं शताब्दी में हुए । तब भास ईसा की तीसरी या चौथी शताब्दी से पूर्व के नहीं ठहरते । इन सब मतों पर विचार करने के उपरान्त हमारे पाठक जिस स्थान पर पहुँचते हैं स्वयं लेखक उससे आगे पहुँचने का दावा नहीं रखता । अँग्रेज़ी में एक कहावत है "When the philosphers disagree wno is to decide." हमारे लिए कवि का काल-विचार आनुषंगिक मात्र है । श्री गणपति शास्त्री ने जिन नाटकों का उद्धार किया है वे भास रचित हैं या नहीं—वे ईसा की नवीं शताब्दी की रचना हैं या वीसवीं शताब्दी की—स्वयं शास्त्री जी की रचना हैं—किंवा वे मूल संस्कृत के तामिल अनुवाद का संस्कृत अनुवाद हैं—अथवा वे आठ दस जनों की सम्मि-

---

*The Date of Kalidas (Reprint from the Allahabad University studies Vol. II)
K. C. Chatterjee M. A.

और वासवदत्ता लता मण्डप में घिरी बैठी हैं और वत्सराज बाहर अपने सखा विदूषक से बातचीत करता है, सहृदय पाठकों को मोहित किये बिना नहीं रहेगा। इसका यह अर्थ नहीं कि वासवदत्ता में ये ही दो चार उल्लेखनीय स्थल हैं। समस्त नाटक ऐसे स्थलों से भरा पड़ा है। दूसरे अङ्क में वत्सराज उदयन की चर्चा छिड़ने पर चेटी कहती है—

'यदि वह राजा कुरूप हुआ तो—'

चेटी के मुँह से ऐसी बात सुनकर वासवदत्ता कह उठती है—'नहीं नहीं वे बड़े दर्शनीय हैं!'

कैसी स्वाभाविक बात है! पद्मावती तब पूछती है—

'आर्ये, तुमने कैसे जाना?'

वासवदत्ता अपने को सँभालकर कहती है—'सखी, उज्जयिनी के लोग ऐसा ही कहते हैं।'

कवि अपने लिए जान बूझ कर कठिन समस्या उपस्थित करता है। वह सुविधा के लिए स्वाभाविकता की बलि नहीं देता। चौथे अङ्क में भी पद्मावती के यह कहने पर कि 'जिस प्रकार आर्यपुत्र मुझे प्रिय हैं उसी प्रकार वासवदत्ता को भी होंगे' वासवदत्ता के मुँह से निकल पड़ता है 'उससे भी अधिक!' वह इससे

अधिक स्वाभाविक और सच्ची बात कह ही नहीं सकती थी।

चौथे अङ्क में बातों ही बातों में वासवदत्ता पूछती है 'सखी, तुम्हें महाराज कैसे प्यारे हैं ?'

पद्मावती कहती है—'आर्ये, यह तो नहीं जानती, परन्तु उनके बिना मन न जाने कैसा हो जाता है।'

उसका यह उत्तर कालिदास की शकुन्तला के योग्य है।

किन्तु पद्मावती का चरित्र कोमल ही नहीं वरन् उच्च भी है। उसमें रमणी-हृदय की पवित्र और विवेकमयी उज्ज्वलता है। वह सत्य है, शिव है, और सुन्दर है। चौथे अङ्क में राजा के यह कहने पर कि—

वासवदत्ता तदपि हृदय में बस रही,
भुला सकी यह उसे न, वह अब भी वही।

चेटी कहती है—'राजकुमारी! तुम्हारे स्वामी बड़े अनुदार हैं।'

इस पर पद्मावती कहती है—'अरी, ऐसा मत कह। वे बड़े उदार हैं— जो अभी तक आर्या वासवदत्ता को नहीं भूले ?'

हृदय की कितनी विशालता है! कितनी समवेदना है! वह राजा से भी अधिक उदार है।

कवि अन्तर्जगत के व्यापारों को चित्रण करने में जैसा कुशल है वैसा ही कुशल बहिर्जगत के व्यापारों को चित्रण करने में भी। तपोवन का वर्णन कैसा स्वाभाविक और सुन्दर है—

शङ्का रहित अचकित हरिण आनन्द से हैं चर रहे,
होकर दया रक्षित विटप फूलों फलों से भर रहे।
गोकुल कपिल हैं बहुत से कृषि हीन प्रान्तर है पड़ा,
संशय नहीं वह धूम धूसर यह तपोवन है बड़ा॥

उसी स्थान पर संध्या की धूम धूसरित शोभा देखिए—

खग बसेरों को चले; मुनि जन नहाने जा रहे।
वह्नि तेज बढ़ा, धुएँ के जाल शोभा पा रहे॥
दूर नीचे सूर्य भी संक्षिप्त किरणें कर अहा!
अस्त शिखरों में निरन्तर रथ घुमा कर जा रहा।

कवि की एक उक्ति कैसी अनूठी है:—

कौन बचा सकता है उसको काल जिसे तकता है।
रस्सी टूटे हुये घड़े को कौन रोक सकता है।

भास के अन्य नाटकों से इस प्रकार के अनेक उदाहरण दिए जा सकते हैं। उन सब के लिए यहाँ स्थान नहीं। उनके कवित्व और नाट्य-नैपुण्य की चर्चा करना वास्तव में हमारे लिए धृष्टता होगी। उनकी भाषा की

चर्चा करते हुए शास्त्रीजी एक स्थल पर उनके संबन्ध में लिखते हैं कि 'छन्द लालित्य और पद-विन्यास में भास के नाटक ऋषिसूक्ति के समान चित्तोल्लासी हैं।' एतद्देशीय विद्वानों की बात जाने दीजिए। भास के कवित्व और नाट्य नैपुण्य की विदेशी पण्डितों तक ने मुक्त कण्ठ से प्रशंसा की है। उनके सम्बन्ध में एक यूरोपीय विद्वान Prof. Winternitz, की सम्मति अवलोकनीय है:—

The author (Bhasa) must have been a great poet and above all a dramatic genius···All the classical dramas are more or less book dramas, while these plays are one and all the works of a born dramatist, wonderfully adapted to the stage......... nearly all the plays are works of great poetical merit worthy of the name of Bhasa.

अर्थात् 'इन नाटकों का रचयिता अवश्य कोई महाकवि और प्रतिभाशाली नाटककार रहा होगा। प्राचीन साहित्य के दृश्य काव्य नाम मात्र के दृश्य काव्य हैं, किन्तु प्रस्तुत नाटक किसी सिद्ध-हस्त नाटककार की रचना हैं—वे आश्चर्य रूप से रंग मंच पर खेले जाने

श्रीगणेशायनमः

स्वप्न वासवदत्ता

(नान्दी के अन्त में सूत्रधार का प्रवेश)

सूत्रधार

उदयनवेन्दुसवर्णावासवदत्तावलौ बलस्य त्वाम् ।
पद्मावतीर्णपूर्णौ वसन्तकम्रौ भुजौ पाताम् ॥*

---

*उदयकालीन नवीन चन्द्रमा के समान वर्ण वाली, आसव पान से उत्पन्न हुए विशेष बल (अथवा अबल—शैथिल्य) से युक्त, लक्ष्मी (शोभा) के आविर्भाव से परिपूर्ण, और वसन्त के समान सुन्दर (वसन्त कालोचित वेषभूषा से सज्जित अथवा वसन्त नाम के तालवृक्ष के समान श्री बलभद्र की दोनों भुजाएँ आपकी रक्षा करें ।

श्रीगणेशाय नमः

स्वप्न वासवदत्ता

(नान्दी के अन्त में सूत्रधार का प्रवेश)

सूत्रधार

उदयनवेन्दुसवर्णावासवदत्ताबलौ बलस्य त्वाम् ।
पद्मावतीर्णपूर्णौ वसन्तकम्रौ भुजौ पाताम् ॥*

---

*उदयकालीन नवीन चन्द्रमा के समान वर्ण वाली, आसव पान से उत्पन्न हुए विशेष बल (अथवा अबल—शैथिल्य) से युक्त, लक्ष्मी (शोभा) के आविर्भाव से परिपूर्ण, और वसन्त के समान सुन्दर (वसन्त कालोचित वेषभूषा से सज्जित अथवा वसन्त नाम के तालवृक्ष के समान श्री बलभद्र की दोनों भुजाएँ आपकी रक्षा करें ।

वासवदत्ता

आर्य, हमको यह कौन हटाता है?

यौगन्धरायण

जो अपने आपको धर्म-मार्ग से हटाता है, देवी।

वासवदत्ता

आर्य, मैं यह पूछती हूँ, कि क्या हम लोग भी हटा दिए जायँगे?

यौगन्धरायण

देवी, अज्ञात दैव इसी प्रकार अवज्ञा करता है।

वासवदत्ता

आर्य, मुझे परिश्रम उतना नहीं खलता, जितना यह अपमान।

यौगन्धरायण

देवी, ये तो आपके लिए भोगकर छोड़ी हुई बातें हैं। इसलिए इस पर ध्यान मत दीजिए।

अभिमत विषयों का तुमको भी मिला प्रथम सुख भोग,
स्वामी की जय होने पर फिर आवेगा वह योग।

काल किया करता है जग में परिवर्तन का काम,
चक्रनेमि-सम भाग्य-पंक्ति भी चलती है अविराम।

भट

हटिए, सज्जनो, हटिए!

(कंचुकी का प्रवेश)

कंचुकी

ठहरो, सम्भषक ठहरो, इस प्रकार लोगों को मत हटाओ। देखो,

नृप-निन्दा के हेतु ये वचन कहो मत क्रूर,
रहते यहाँ मनस्वि-जन पुर-परिभव तज दूर।

भट

जो आज्ञा, आर्य।

(प्रस्थान)

यौगन्धरायण

यह भला आया। वत्से! आओ इसके पास चलें।

वासवदत्ता

आर्ये, यही कीजिए।

वासवदत्ता

(स्वगत) यही वह राजकुमारी है। जैसा इसका कुल है वैसा ही रूप।

पद्मावती

आर्ये, प्रणाम !

तापसी

चिरंजीव होओ, बेटी। आओ, तपोवन तो अतिथि जनों का अपना ही घर है।

पद्मावती

आर्ये, मैं भी यही समझती हूँ। आपके अनुग्रह-पूर्ण आदर-सत्कार से मैं कृतकृत्य हुई।

वासवदत्ता

(स्वगत) केवल रूप ही नहीं, इसकी वाणी भी मधुर है।

तापसी

(चेटी के प्रति) भद्रे, राजभगिनी का किसी राजा के साथ अभी विवाह निश्चित नहीं हुआ ?

चेटी

उज्जैन के राजा प्रद्योत ने इनके साथ विवाह की इच्छा से दूत भेजा है।

वासवदत्ता

(स्वगत) यही हो, यही हो, अब तो यह मेरी आत्मीय होगई !

तापसी

अहा ! कैसा मनोरम रूप है ! और सुनते हैं दोनों राजकुल भी महान हैं ।

पद्मावती

(कंचुकी के प्रति) आर्य, आपने देखा, क्या मुनि जन हमें अनुगृहीत करेंगे ? जिसे जो अभीष्ट हो उसे स्वीकार करने के लिए तपस्वियों से निवेदन कीजिए।

कंचुकी

जो आज्ञा । हे आश्रमवासी तपस्वियो, आप लोग सुनिए—मगध-राज-पुत्री पद्मावती श्रद्धा और विश्वास पूर्वक धर्म के लिए अर्थद्वारा आप सबको आमंत्रित करती है ।

घट चाहिए किसको, तथा पट कौन लेना चाहता,
गुरु को सुदीक्षित शिष्य है क्या द्रव्य देना चाहता ?
कहिए जिसे जो इष्ट हो, देकर वही श्रद्धा युता,
परितोष पाना चाहती है धर्म-शीला नृप-सुता ॥

यौगंधरायण

(स्वगत) अहा, उपाय मिल गया। (प्रकाश) अजी, मैं एक अर्थी हूँ ।

पद्मावती

अहा, मेरा तपोवन आना सफल होगया।

तापसी

इस आश्रम के निवासी तो सब प्रकार से संतुष्ट हैं। यह कोई आगन्तुक जान पड़ता है।

कंचुकी

कहिए, आपको क्या चाहिए ?

यौगन्धरायण

यह मेरी बहिन है। इसका स्वामी परदेश गया है। मेरी इच्छा है कि कुछ काल के लिए राजकुमारी इसका परिपालन करें।

नहीं चाहिए मुझे वसन, धन भोग कहीं कुछ,
पहने मैंने वृत्ति हेतु काषाय नहीं कुछ,
मेरी भगिनी की सुशील-रक्षा यह कन्या,
कर सकती है धर्म धारिणी धीरा धन्या ॥

वासवदत्ता

(स्वगत) हाय, आर्य यौगन्धरायण मुझे यहाँ छोड़े जाते हैं। जो हो, वे बिना सोचे विचारे कुछ नहीं करेंगे।

कंचुकी

राजकुमारी, इस परिव्राजक की याचना बहुत बड़ी है। क्योंकि—

तप-जीवन-धन-दान में सुख ही सुख सब ओर,
थाती रखने में सदा केवल कष्ट कठोर।

पद्मावती

आर्य, पहले वैसी घोषणा करके अब यह विचार करना अनुचित है। जो ये कहते हैं वही कीजिए।

कंचुकी

राजकुमारी, आपने अपने अनुरूप ही बात कही।

चेटी

ऐसी सत्यशीला राजकुमारी चिरजीवी हों ।

तापसी

भद्रे, चिरजीवी हो ।

कंचुकी

ऐसा ही हो । (जाकर) हे तपस्वी, आपकी बहिन के परिपालन का भार राजकुमारी स्वीकार करती हैं ।

यौगंधरायण

मैं अनुगृहीत हुआ । (वासवदत्ता के प्रति) वत्से, राजकुमारी के समीप जाओ ।

वासवदत्ता

(स्वगत) क्या गति है ! मैं अभागिनी यह चली !

पद्मावती

आओ, आओ, अब तो तुम मेरी आत्मीय होगई ।

तापसी

आकृति से यह भी राजपुत्री जान पड़ती है ।

चेटी

आर्या ने ठीक कहा। मुझे भी ये सुख से पली हुई जान पड़ती हैं।

यौगंधरायण

(स्वगत) अहा, मेरा आधा भार तो उतरा। मंत्रियों के साथ जो परामर्श हुआ था वही हुआ। महाराज के पुनः राज्य प्राप्त करने पर जब देवी वासवदत्ता उनके निकट पहुँचेंगी तब श्री मगध-राजपुत्री ही उनके विषय में मेरी साक्षिणी होंगी।

आपत्ति जानी थी, उन्होंने, था जिन्होंने कह दिया—
'शुभ लक्षिणी पद्मावती होगी महीपति की प्रिया।'
विश्वास कर उन पर किया है कार्य यह मैंने सभी;
विधि भी परीक्षित सिद्ध वाक्य न टाल सकता है कभी।

(एक ब्रह्मचारी का प्रवेश)

ब्रह्मचारी

(ऊपर देख कर) मध्याह्न होगया। मैं बहुत थक गया हूँ। कहाँ विश्राम करूँ? (घूमकर) देखता हूँ, यहाँ सब ओर तपोवन है। तभी तो—

शंकारहित अचकित हरिण आनन्द से हैं चर रहे,
होकर दया-रक्षित विटप फूलों फलों से भर रहे ।
गोकुल कपिल हैं बहुत-से कृषि हीन प्रान्तर है पड़ा,
संशय नहीं बहु धूम धूसर यह तपोवन है बड़ा ॥

तो यहीं चलूँ । (प्रवेश करके) अरे, यह तो कोई आश्रम के बाहर का मनुष्य जान पड़ता है । (दूसरी ओर देखकर) अथवा यहाँ तपस्विजन भी तो होंगे ! तब जाने में दोष क्या है ? अरे, इधर तो स्त्रियाँ हैं !

कंचुकी

आप स्वच्छन्दतापूर्वक आइए । आश्रम तो सभी के लिए है ।

वासवदत्ता

अरे !

पद्मावती

आर्या को परपुरुष का दर्शन उचित नहीं है । जो हो, मुझे अपनी धरोहर की अच्छी तरह रक्षा करनी चाहिए ।

कंचुकी

हम लोग यहाँ पहले से आए हैं। आप हमारा अतिथि-सत्कार स्वीकार कीजिए।

ब्रह्मचारी

तथास्तु। (आचमन करके) मेरी थकावट मिट गई।

यौगन्धरायण

आर्य, कहाँ से आते हैं, कहाँ जाते हैं, और आपका निवास कहाँ है ?

ब्रह्मचारी

मैं राजगृह का निवासी हूँ। वत्स-प्रदेश में लावाणक नामक गाँव है, मैं वहाँ वेदों का विशेष अध्ययन करता था।

वासवदत्ता

(स्वगत) हा, लावाणक ! लावाणक नाम सुनकर मेरा दुःख फिर नया-सा होगया है।

यौगन्धरायण

तो क्या आपका अध्ययन पूरा होगया ?

ब्रह्मचारी

अभी नहीं।

यौगन्धरायण

फिर आप कैसे चले आये ?

ब्रह्मचारी

वहाँ एक दारुण दुर्घटना होगई।

यौगन्धरायण

सो कैसी ?

ब्रह्मचारी

वहाँ उदयन नाम का राजा वास करता है।

यौगन्धरायण

महाराज उदयन का नाम तो हमने भी सुना है—उनका क्या समाचार है ?

ब्रह्मचारी

अवन्ती राजपुत्री वासवदत्ता उसकी अत्यन्त प्रिय पत्नी थी।

यौगन्धरायण

अच्छा, फिर ?

ब्रह्मचारी

राजा आखेट करने गया था। इसी बीच में वहाँ आग लगने से सारा गाँव जल गया और साथ में वह भी जल गई।

वासवदत्ता

(स्वगत) झूठ! झूठ! मैं अभागिनी तो यह जीती हूँ!

यौगन्धरायण

तब, तब!

ब्रह्मचारी

तब उसे बचाने के लिए मंत्री यौगंधरायण भी आग में कूद पड़ा।

यौगन्धरायण

मंत्री भी गिर पड़ा! तब?

ब्रह्मचारी

आखेट से लौटने पर राजा ने जब यह वृत्तान्त सुना तब उसके वियोग-जनित संताप से विकल होकर वह भी अग्नि में जल मरने को

उद्यत होगया। अमात्यों ने बड़ी कठिनाई से उसे रोका।

वासवदत्ता

(स्वगत) जानती हूँ, जानती हूँ, अपने ऊपर आर्यपुत्र का अनुग्रह !

यौगन्धरायण

तब, तब !

ब्रह्मचारी

तब जलने से बचे हुए उसके देहोपभुक्त आभूषणों को हृदय से लगाकर राजा मूर्च्छित होगया !

सब

हाय ! हाय !

वासवदत्ता

(स्वगत) आर्य यौगन्धरायण की इच्छा पूरी हो !

चेटी

राजकुमारी ! ये आर्या रो रही हैं !

पद्मावती

ये बड़ी पर-दुःख-कातरा हैं।

यौगन्धरायण

इसका क्या कहना। मेरी बहिन बड़ी ही सहृदया है। फिर क्या हुआ?

ब्रह्मचारी

फिर धीरे धीरे राजा को चेतना आई।

पद्मावती

अहा, बच गये! मूर्च्छित होगये सुन कर मेरा हृदय सूना-सा होगया था।

यौगन्धरायण

फिर, फिर?

ब्रह्मचारी

तब पृथ्वी पर पड़े रहने से धूल धूसरित शरीर वाला वह राजा अचानक उठकर "हा, वासवदत्ते! हा अवन्तिराजपुत्रि! हा प्रिये! हा, प्रिय शिष्ये!" इस प्रकार न जाने क्या क्या विलाप करने लगा। अधिक क्या कहूँ —

चकवा चकवी बिना कभी यों विकल नहीं होता है,
कोई अन्य वियोगी इतना धैर्य नहीं खोता है।
मान रहा है पति यों जिसको धन्य वही सुकुमारी,
जली हुई भी प्रेमामृत से जीती है वह नारी।

यौगंधरायण

किसी अमात्य ने उसे प्रकृतिस्थ करने का प्रयत्न नहीं किया?

ब्रह्मचारी

रुमण्वान नाम के एक मंत्री ने इस सम्बन्ध में बड़ा प्रयत्न किया। उसकी दशा भी बड़ी कारुणिक है।

नृप सम दुःखी रोता है वह, सूख गया मुख मण्डल है,
कहाँ वेश-भूषा? भोजन भी छूटा, हुआ क्षीण बल है।
निशि-दिन नृप सेवा करता है सह कर यों दुख दुसह भी,
प्रभु न करे, नृप मरे कहीं तो मर जावेगा फिर वह भी।

वासवदत्ता

(स्वगत) संतोष की बात है! आर्यपुत्र योग्य रक्षक के हाथों में पहुँच गए।

यौगंधरायण

(स्वगत) अहो, रुमण्वान बड़ा भार उठा रहा है। क्योंकि—

उतर गया है मेरा भार,
किन्तु उसे श्रम हुआ अपार;
अवलम्बित है जिस पर भूप,
वह सबका अवलम्बन रूप।

(प्रकट) अब तो महाराज प्रकृतिस्थ हैं ?

ब्रह्मचारी

यह मैं नहीं जानता। "यहीं उसके साथ हँसा हूँ, यहीं उसके साथ बातें की हैं, यहीं उसके साथ बैठा हूँ, यहीं उसके साथ प्रणय-कलह किया है, यहीं उसके साथ सोया हूँ ;" इस प्रकार विलाप करते हुए उस राजा को राजमंत्री किसी प्रकार गाँव से लेकर चले गए। उस राजा के चले जाने से वह गाँव ऐसा होगया मानों आकाश से नक्षत्र समेत चन्द्रमा चला गया हो। इस कारण मैं भी वहाँ से चला आया।

तापसी

निश्चय यह राजा बड़ा गुणवान है, आगन्तुक भी जिसकी इस प्रकार प्रशंसा करते हैं।

चेटी

राजकुमारी, क्या वह किसी दूसरी स्त्री का पाणिग्रहण करेगा ?

पद्मावती

यही मैं सोचती हूँ।

ब्रह्मचारी

अब मैं आप से विदा माँगता हूँ।

कंचुकी और यौगंधरायण

अच्छा तो, आपकी अर्थ-सिद्धि हो।

ब्रह्मचारी

तथास्तु।

(प्रस्थान)

यौगंधरायण

आपकी अनुज्ञा हो तो मैं भी जाऊँ।

कंचुकी

राजकुमारी, आप अनुज्ञा दें तो ये भी जाने की इच्छा करते हैं।

पद्मावती

आर्य के बिना इनकी बहिन उत्कण्ठित होंगी।

यौगंधरायण

ऐसा भला संग पाकर क्यों उत्कण्ठित होगी? (कंचुकी की ओर देखकर) तो मैं चलूँ।

कंचुकी

जाइए—फिर मिलने के लिए!

यौगंधरायण

तथास्तु।

(प्रस्थान)

कंचुकी

अब भीतर चलिए।

पद्मावती

(तापसी के प्रति) आर्ये, वन्दे!

तापसी

बेटी, अपने अनुरूप वर पाओ ।

वासवदत्ता

(तापसी के प्रति) आर्ये, मैं भी प्रणाम करती हूँ ।

तापसी

तुम भी शीघ्र अपने पति को प्राप्त करो ।

वासवदत्ता

अनुगृहीत हुई ।

कंचुकी

तो अब चलिए, राजकुमारी । इस समय—

खग बसेरों को चले, मुनिजन नहाने जा रहे;
वह्नि तेज बढ़ा, धुएँ के जाल शोभा पा रहे ।
दूर नीचे सूर्य भी संक्षिप्त किरणें कर अहा,
अस्त शिखरों में निरन्तर रथ घुमाकर जा रहा ।

(सबका प्रस्थान)

इति प्रथमाङ्क

—:०:—

दूसरा अङ्क

(चेटी का प्रवेश)

चेटी

कुंजरिके, कुंजरिके ! राजकुमारी पद्मावती कहाँ हैं ? क्या कहा ? माधवी-लता-मण्डप के समीप गेंद खेल रही हैं ? तो मैं वहीं चलूँ (घूम कर) अहा, राजकुमारी तो ये रहीं ! क्या मनोहर मुद्रा है ? कानों में कर्ण-फूल झूल रहे हैं । व्यायाम-जनित परिश्रम से मुख पर पसीने की बूँदें झलक रही हैं । गेंद खेलती हुई इसी ओर आ रही हैं । अच्छा, पास जाऊँ ।

(प्रस्थान)

इति प्रवेशक

(वासवदत्ता के साथ गेंद खेलती हुई सपरिकर पद्मावती का प्रवेश)

वासवदत्ता

सखी, यह है तुम्हारी गेंद।

पद्मावती

आर्ये, अब रहने दो।

वासवदत्ता

सखी, बहुत देर तक गेंद खेलते रहने से तुम्हारे ये लाल हाथ और भी अधिक लाल होकर पराये-से हो गये हैं।

चेटी

खेलो, खेलो, राजकुमारी, जी भर कर खेलो, जब तक तुम्हारा रमणीय कन्याभाव है।

पद्मावती

आर्ये, क्या तुम मेरी हँसी उड़ाती हो?

वासवदत्ता

नहीं, नहीं सखी। आज तुम बहुत ही शोभित

हो रही हो। मुझे तो चारों ओर तुम्हारा ही वर-वदन दिखाई देता है।

पद्मावती

बस, अब और उपहास रहने दो।

वासवदत्ता

बहुत अच्छा, महासेन की भावी वधू, मैं चुप हूँ।

पद्मावती

यह महासेन कौन हैं?

वासवदत्ता

उज्जयिनी में प्रद्योत नाम के एक राजा हैं। विपुल सैन्य-बल के कारण उन्हीं को महासेन कहते हैं।

चेटी

हमारी राजकुमारी की उस राजा के साथ सम्बन्ध करने की इच्छा नहीं है।

वासवदत्ता

तब किसके साथ सम्बन्ध करने की इच्छा है?

चेटी

गुणवान वत्सराज उदयन के साथ।

वासवदत्ता

(स्वगत) अच्छा, आर्यपुत्र को वरना चाहती है ! (प्रकट) क्यों ?

चेटी

राजकुमारी की कृपा ।

वासवदत्ता

समझ गई, समझ गई ! यह भी उनके लिए पागल है ।

चेटी

यदि वह राजा कुरूप हुआ तो ?

वासवदत्ता

(अचानक) नहीं, नहीं, वे बड़े दर्शनीय हैं ।

पद्मावती

आर्ये, तुम कैसे जानती हो ?

वासवदत्ता

(स्वगत) आर्यपुत्र के पक्षपात के कारण मुझसे भूल हो गई ! अब, क्या करूँ ? हाँ, (प्रकट) उज्जयिनी के लोग ऐसा ही कहते हैं ।

पद्मावती

ठीक है। उज्जयिनी के लिए वे दुर्लभ नहीं हैं। सौन्दर्य सबके लिए प्रिय और सौभाग्य का विषय होता है।

(धात्री का प्रवेश)

धात्री

राजकुमारी की जय हो। आपका सम्बन्ध निश्चित होगया।

वासवदत्ता

आर्ये, किसके साथ ?

धात्री

वत्सराज उदयन के साथ।

वासवदत्ता

वे कुशलपूर्वक हैं ?

धात्री

हाँ, सकुशल हैं, आर यहीं आये हैं। उन्होंने राजकुमारी का सम्बन्ध स्वीकार कर लिया है।

वासवदत्ता

बड़ी अनहोनी हुई।

धात्री

कैसी अनहोनी ?

वासवदत्ता

कुछ नहीं। संताप के कारण वे उदासीन हो सकते हैं।

धात्री

आर्ये, शास्त्रज्ञ महा पुरुषों का हृदय शीघ्र ही प्रकृतिस्थ हो जाता है।

वासवदत्ता

आर्ये, क्या उन्होंने स्वयं ही ब्याह की इच्छा प्रकट की है ?

धात्री

नहीं, नहीं। वे यहाँ किसी अन्य प्रयोजन से आये थे। उनका कुल, रूप, गुण, यौवन और स्वभाव देखकर स्वयं महाराज ने ही सम्बन्ध किया।

वासवदत्ता

(स्वगत) ऐसा ! तब तो आर्यपुत्र का कोई अपराध नहीं ।

(दूसरी चेटी का प्रवेश)

चेटी

आर्ये, शीघ्र चलिए, शीघ्र चलिए । महारानी कहती हैं कि आज ही शुभ नक्षत्र है, इसलिए आज ही व्याह का मंगलाचार होगा ।

वासवदत्ता

(स्वगत) ज्यों ज्यों शीघ्रता की जाती है त्यों त्यों मेरा हृदय अंधकारमय होता जाता है ।

धात्री

आओ, राजकुमारी, आओ ।

(सबका प्रस्थान)

इति द्वितीयाङ्क

तृतीयाङ्क

(चिन्ता करती हुई वासवदत्ता आती है)

वासवदत्ता

विवाह के आमोद से परिपूर्ण अन्तःपुर के चौक में पद्मावती को छोड़कर मैं यहाँ प्रमद-वन में चली आई हूँ। देखूँ, दुर्भाग्य से दुःखित मन को यदि कुछ बहला सकूँ। हाय! कैसी अनहोनी हुई! आर्य-पुत्र भी पराये होगये! थोड़ी देर यहीं बैठूँ। (बैठती है) धन्य है चक्रवाक वधू को, जो पति-वियोग होने पर नहीं जीती। परन्तु मैं अभागिनी न मरूँगी। आर्यपुत्र के दर्शन की लालसा से जीती रहूँगी।

(फूल लिये हुए चेटी का प्रवेश)

चेटी

आर्या, आवन्तिका कहाँ गईं ? (घूमकर और देखकर) अरे, ये तो चिन्ता में डूबी हुई, शून्यहृदय से प्रियंगुलता के नीचे शिला पर बैठी हैं। इनका शृंगार रहित अभद्र वेश देखकर ऐसा जान पड़ता है मानों चन्द्रलेखा पर कुहरा छाया है। अच्छा, मैं भी वहीं चलूँ। (जाकर) आर्ये, आवन्तिके, मैं आपको कब से खोज रही हूँ ?

वासवदत्ता

किसलिए ?

चेटी

हमारी महारानी कहती हैं कि आप उच्च-कुल-सम्भूता स्नेहशीला और अत्यन्त निपुण हैं—इस कारण आप ही यह कौतुक-माला गूँथ दें।

वासवदत्ता

किसके लिए ?

चेटी

हमारी राजकुमारी के लिए।

वासवदत्ता

(स्वगत) हाय! यह भी मुझे करना पड़ेगा! निस्सन्देह दैव बड़ा निर्दय है!

चेटी

आर्ये, इस समय अन्य चिन्ता छोड़ दीजिए। वर मणिभूमि पर स्नान कर रहे हैं। इसलिए आर्या विलम्ब न करें।

वासवदत्ता

(स्वगत) हाय, चिन्ता भी न करूँ! (प्रकट) सखी, जामाता को देखा?

चेटी

जी, राजकुमारी के स्नेह और अपने कौतूहल के कारण अच्छी तरह देखा है।

वासवदत्ता

कैसा है?

चेटी

क्या कहूँ, ऐसा और कभी नहीं देखा !

वासवदत्ता

अरी बता, बता कैसा है ?

चेटी

जान पड़ता है मानों धनुष-बाण-हीन कामदेव !

वासवदत्ता

रहने दो, होगा।

चेटी

अब क्यों रोकती हो ?

वासवदत्ता

पर-पुरुष की चर्चा ठीक नहीं।

चेटी

तो माला शीघ्र गूँथ दीजिए।

वासवदत्ता

ला, गूँथ दूँ।

चेटी

लीजिए।

चतुर्थाङ्क

(विदूषक का प्रवेश)

विदूषक

सौभाग्य से महाराज के व्याह-मङ्गल का रमणीय उत्सव देखने को मिला। कौन जानता था कि हम लोग उस अनर्थ-सलिल की भँवर में पड़कर पुनः उबर सकेंगे? अब आनन्द से राजमहल में सोता हूँ, अन्तःपुर की बावड़ियों में स्नान करता हूँ, स्वभाव से ही मधुर और कोमल लड्डू उड़ाता हूँ—अप्सराओं का संवास छोड़कर स्वर्ग का सभी सुख लूट रहा हूँ। बस, एक बड़ा दोष है—भोजन अच्छी तरह नहीं पचता, स्वच्छ और सुकोमल शय्या पर भी नींद नहीं आती, दिन भर पेट गुड़-गुड़ किया करता है। जो निर्भय होकर यथेच्छ भोजन नहीं कर सकता उसे सुख कहाँ?

(चेटी का प्रवेश)

चेटी

आर्य वसन्तक कहाँ गये ? (घूमकर देखती हुई) अरे ये हैं ! (पास जाकर) आर्य वसन्तक, मैं तुम्हें कब से खोज रही हूँ ।

विदूषक

भद्रे, किसलिए खोज रही थीं ?

चेटी

महारानी पूछती हैं कि जामाता ने स्नान कर लिया या नहीं ?

विदूषक

क्यों पूछती हैं ?

चेटी

और क्या ? स्नान कर लिया हो तो फ़ूल चन्दन ले आऊँ ।

विदूषक

हाँ, उन्होंने स्नान कर लिया है । परन्तु भोजन को छोड़ कर और चाहे जो ले आओ ।

चेटी

भोजन के लिए आप क्यों रोकते हैं ?

विदूषक

मुझ अभागे को कोकिल के अक्षि-परिवर्तन की भाँति कुक्षि-परिवर्तन होगया है।

चेटी

ईश्वर करे तुम ऐसे ही बने रहो।

विदूषक

तुम जाओ, मैं भी महाराज के पास चलूँ ।

(दोनों का प्रस्थान)

इति प्रवेशक

(आवन्तिका समेत सपरिकर पद्मावती का प्रवेश)

चेटी

राजकुमारी, प्रमद वन में किस लिए आना हुआ ?

पद्मावती

सखी, शेफालिका फूली है या नहीं यह देखने आई हूँ ।

चेटी

राजकुमारी, फूली क्यों नहीं; उसकी डालें प्रवालों से गुथी हुई मोतियों की माला जैसी शोभित हो रही हैं।

पद्मावती

यदि ऐसा है तो फिर विलम्ब क्यों ?

चेटी

तो आप क्षण भर के लिए इस शिला-तल पर बैठ जाइए। मैं फूल चुन लूँ ।

पद्मावती

आर्ये ! यहाँ बैठोगी ?

वासवदत्ता

अच्छी बात है।

(दोनों बैठती हैं)

चेटी

(फूल तोड़कर) राजकुमारी, देखो, देखो, शेफालिका के फूलों से भरी हुई मेरी यह अञ्जलि मैनशिल की बट्टी के समान दिखाई देती है।

पद्मावती

अहा, कैसे सुन्दर फूल हैं! आर्ये, देखिए।

वासवदत्ता

सचमुच बड़े दर्शनीय हैं।

चेटी

और चुन लाऊँ, राजकुमारी ?

पद्मावती

नहीं, नहीं अब रहने दो।

वासवदत्ता

क्यों रोकती हो ?

पद्मावती

जिसमें कि आर्यपुत्र यहाँ आकर कुसुम-समृद्धि देखें और उसे सम्मानित करें।

वासवदत्ता

सखी, महाराज तुम्हें प्यारे लगते हैं?

पद्मावती

आर्ये, यह तो नहीं जानती, परन्तु उनके बिना मन न जाने कैसा हो जाता है!

वासवदत्ता

(स्वगत) यह सच कहती है। मैं बड़ी कठोर हूँ।

चेटी

राजकुमारी ने बड़े ढंग से अपने प्रिय की प्रियता प्रकट की।

पद्मावती

मुझे एक सन्देह है।

वासवदत्ता

सो क्या? सो क्या?

पद्मावती

आर्यपुत्र जैसे मुझे प्रिय हैं, आर्या वासवदत्ता को भी क्या वैसे ही प्रिय होंगे ?

वासवदत्ता

उससे भी अधिक।

पद्मावती

तुमने कैसे जाना ?

वासवदत्ता

(स्वगत) आर्यपुत्र के पक्षपात के कारण फिर भूल होगई। अच्छा, यों कहूँ। (प्रकट) यदि कम प्रेम होता तो स्वजन छोड़ कर राजा के साथ न आती।

पद्मावती

होगा !

चेटी

राजकुमारी, तुम भी महाराज से वीणा सीखने के लिए कहो न।

पद्मावती

मैंने कहा था।

वासवदत्ता

तब उन्होंने क्या कहा ?

पद्मावती

कुछ नहीं। एक दीर्घ निश्वास लेकर रह गये।

वासवदत्ता

इससे तुमने क्या समझा ?

पद्मावती

यही कि आर्या वासवदत्ता के गुणों का स्मरण करके दया-वश मेरे आगे रोये नहीं।

वासवदत्ता

(स्वगत) यदि यह सच है तो मैं धन्य हूँ ।

(राजा और विदूषक का प्रवेश)

विदूषक

अहा-हा-हा...... ! इधर उधर फैले हुए बन्धुजीव के फूलों से प्रमद वन कैसा रमणीय हो रहा है ! आइए, महाराज।

राजा

सखे वसन्तक, आया।

उज्जयिनी जाकर जब मैंने देखी थी नृप-बाला,
तभी काम ने पाँच शरों से मुझे विद्ध कर डाला।
अब भी साल रहे हैं मुझको वे वैसे के वैसे,
मदन-पंचशर है, आया यह छठाँ कहाँ से-कैसे ?

विदूषक

देवी पद्मावती गईं कहाँ ? लतामण्डप में गईं या व्याघ्रचर्म के समान दिखाई पड़नेवाले, असन-वृक्ष के फूलों से ढके हुए पर्वततिलक नामक शिला-पटल पर बैठी हैं, अथवा तीव्र-गंध-पूर्ण सप्तच्छद वन में हैं, किंवा खग-मृगादि की, मूर्तियों से सज्जित दारु-पर्वत पर गई हैं। (ऊपर देख कर) ओ-हो-हो, शरत्-कालीन निर्मल आकाश में बल्देवजी की बढ़ी हुई भुजा के समान दर्शनीय सारस-पंक्ति कैसे समाहित भाव से उड़ी जा रही है, तब तक महाराज इसी को देखें !

राजा

मित्र देखता हूँ ।

विरल, सरल, आयत, उन्नत, नत, उड़ती है मुदमान,
होती है वर वक्र घूम कर फिर सप्तर्षि समान।

बनती है विभाग-सीमा-सी उस नभ की निर्भ्रान्त
कंचुक रहित भुजंगोदर-सा जो है विमल नितान्त ।

चेटी

देखो, देखो, राजकुमारी, उत्पल-माला के समान शुभ्र सारस-पंक्ति कैसे समाहित भाव से उड़ी जा रही है । अरे, ये महाराज—

पद्मावती

अच्छा, आर्यपुत्र हैं (वासवदत्ता के प्रति) आर्ये, तुम्हारा संग छोड़ कर मैं इस समय आर्यपुत्र से नहीं मिलूँगी । आओ, हम सब माधवीमण्डप में चलें

वासवदत्ता

अच्छा, चलो !

(माधवी मण्डप में प्रवेश)

विदूषक

जान पड़ता है देवी पद्मावती यहाँ आकर चली गईं ।

राजा

तुमने कैसे जाना ?

विदूषक

देखिए, शेफालिका के गुल्मों से फूल चुने गये हैं।

राजा

देखो वसन्तक, फूलों की विचित्रता !

वासवदत्ता

वसन्तक का नाम सुनकर ऐसा जान पड़ता है मानों मैं उज्जयिनी में हूँ ।

राजा

वसन्तक, आओ हम इसी शिलातल पर बैठ कर पद्मावती की प्रतीक्षा करें।

विदूषक

बहुत अच्छा। (बैठ कर और फिर उठ कर) दैया रे ! शरत्-काल का तीक्ष्ण आतप बड़ा दुस्सह है। चलिए इस माधवी-मण्डप में चलें !

राजा

अच्छी बात है। चलो आगे।

विदूषक

जो आज्ञा ।

(दोनों घूमते हैं)

पद्मावती

सब को अस्थिर करना ही आर्य वसन्तक का काम है । अब हम लोग क्या करें ?

चेटी

राजकुमारी, भौंरों से छाई हुई इस लता को हिला कर महाराज को रोकूँगी ।

पद्मावती

यही करो ।

(चेटी वैसा ही करती है)

विदूषक

अरे ! अरे ! ठहरिए महाराज, ठहरिए !

राजा

क्यों ?

विदूषक

ये भूत-भौंरे मुझ पर टूट पड़े हैं ।

राजा

ठहरो, ठहरो, बेचारे मधुकरों को मत छेड़ो--

मदकल दम्पति मधुप मिल करते हैं सुख भोग,
तेरी आहट से न हो हम-सा उन्हें वियोग।

इसलिए आओ, हम यहीं बैठें।

विदूषक

यही सही।

(दोनों बैठते हैं)

चेटी

लो, हम तो यहाँ घिर गये !

पद्मावती

अच्छा हुआ, आर्यपुत्र यहीं बैठ गये।

वासवदत्ता

(स्वगत) बड़ी बात है कि आर्यपुत्र शरीर से अच्छे हैं।

वासवदत्ता

इन मधुकरों के उपद्रव के कारण मेरी आँखों में काश-कुसुम की रेणु पड़ने से आँसू आ गये।

पद्मावती

यही होगा।

विदूषक

महाराज, इस समय प्रमदवन में कोई नहीं है, आपसे एक बात पूछूँ ?

राजा

स्वच्छन्दता से।

विदूषक

आपको महारानी वासवदत्ता अधिक प्यारी थीं या देवी पद्मावती ?

राजा

मित्र, तुम मुझे इस सङ्कट में क्यों डालते हो ?

पद्मावती

सखी, आर्यपुत्र बड़े सङ्कट में पड़े हैं।

वासवदत्ता

(स्वगत) मैं अभागिनी भी—

विदूषक

आप निश्चिन्त होकर कहिए। एक तो गत हो गई है, और दूसरी समीप नहीं है।

राजा

मित्र, मैं न कहूँगा, तुम बड़े वाचाल हो।

पद्मावती

आर्यपुत्र ने सब तो कह दिया। अब रह ही क्या गया ?

विदूषक

महाराज, मैं सत्य की सौगंध खाकर कहता हूँ, किसी से न कहूँगा—लो, मैंने जीभ काट ली !

राजा

मुझे कहने का उत्साह नहीं होता।

पद्मावती

हाय, इसकी उलटी बुद्धि! इतने पर भी नहीं समझता।

विदूषक

आप, क्यों नहीं कहते ? बिना कहे इस स्थान से आपको एक डग भी न जाने दूँगा। यह लीजिए, आप को रोक लिया !

राजा

क्या बलपूर्वक ?

विदूषक

हाँ, बलपूर्वक।

राजा

अच्छा देखूँ।

विदूषक

अप्रसन्न न हूजिए। आपको मेरी सौगन्ध जो सत्य न कहें !

राजा

क्या गति है ? सुनो—

प्यारी है अत्यन्त मुझे पद्मावती,
रूप-शील-माधुर्य-मयी सुमुखी-सती।

वासवदत्ता तदपि हृदय में बस रही,
भुला सकी यह उसे न, वह अब भी वहीं !

वासवदत्ता

(स्वगत) धन्य भाग्य मैंने सब भर पाया । अहो, अज्ञातवास में भी बड़े गुण हैं !

चेटी

राजकुमारी, तुम्हारे स्वामी बड़े अनुदार हैं ।

पद्मावती

अरी, ऐसा न कह । वे बड़े उदार हैं, जो अभी तक आर्या वासवदत्ता को नहीं भूले ।

वासवदत्ता

भद्रे ! तुमने अपने बड़े कुल के अनुरूप ही बात कही है ।

राजा

मुझसे तो तुमने पूछ लिया; अब तुम बताओ कि तुम्हें कौन अधिक प्रिय है, वासवदत्ता या यह पद्मावती ?

पद्मावती

देखती हूँ, आर्यपुत्र भी वसन्तक होगये।

विदूषक

मेरा इस सम्बन्ध में कुछ कहना व्यर्थ है। मेरे लिए तो दोनों बड़ी हैं।

राजा

मूर्ख, मुझसे तो बलपूर्वक पूँछ लिया अब अपनी बार को कुछ नहीं कहना चाहता।

विदूषक

क्या मुझसे भी बलपूर्वक पूछना चाहते हो?

राजा

इसमें क्या सन्देह?

विदूषक

तब तो सुन चुके!

राजा

अप्रसन्न न हो ब्राह्मण देवता, अप्रसन्न न हो। अपनी ही इच्छा से कहो।

विदूषक

तो सुनिए। महारानी वासवदत्ता मुझे बहुत प्रिय थीं। देवी पद्मावती, युवती हैं, दर्शनीया हैं, अकोपना हैं, निरहंकारा हैं, मधुरभाषिणी हैं एवं उदार स्वभाववाली हैं। और, सबसे बड़ा एक गुण उनमें यह है कि स्निग्ध और मधुर भोजन लेकर वे मेरी खोज करती हैं कि आर्य वसन्तक कहाँ हैं?

वासवदत्ता

अच्छा, अच्छा, वसन्तक, तुम अब इन्हीं का स्मरण करो!

राजा

रहो, वसन्तक, मैं यह सब देवी वासवदत्ता से कहूँगा!

विदूषक

वासवदत्ता! हाय, वासवदत्ता अब कहाँ? वासवदत्ता तो कभी की गत होगई!

राजा

(सविषाद) ठीक है, वासवदत्ता अब कहाँ!

हेतु हुआ उन्माद का, तेरा ही परिहास।
दोषी है इस कथन का मेरा पूर्वाभ्यास॥

पद्मावती

कैसा रमणीय कथा-प्रसङ्ग था। निर्दयी ने सब बिगाड़ दिया।

वासवदत्ता

(स्वगत) जो हो, मैं तो विश्वस्त हूँ। अहा, परोक्ष में ये कैसे प्रिय वचन सुनने को मिले।

विदूषक

महाराज अधीर न हूजिए। विधाता का विधान कौन टाल सकता है।

राजा

मित्र, तुम मेरे मन की अवस्था नहीं जानते—

बद्धमूल अनुराग नहीं भूला जाता है,
पूर्वस्मृति से दुःख नयापन ही पाता है।
इस चिन्ता का अन्त नहीं आने का अब तो,
है रोदन ही यत्न शान्ति पाने का अब तो।

विदूषक

महाराज का मुख आँसुओं से मलिन होगया है। मैं मुँह धोने के लिए पानी लाऊँ।

(प्रस्थान)

पद्मावती

आर्ये, आर्यपुत्र की आँखें इस समय आँसुओं से भर गईं। चलो, इस बीच में हम निकल चलें।

वासवदत्ता

ठीक है। अथवा तुम यहीं ठहरो। ऐसी दशा में स्वामी को छोड़ कर जाना उचित नहीं। मैं अकेली ही जाती हूँ।

चेटी

आर्या ने बहुत ठीक कहा—राजकुमारी आप महाराज के ही समीप जायँ।

पद्मावती

तो मैं जाऊँ ?

वासवदत्ता

हाँ, अवश्य ।

(प्रस्थान)

(पद्म-पत्र में पानी लिये हुए विदूषक का प्रवेश)

विदूषक

अरे, यह तो देवी पद्मावती हैं !

पद्मावती

आर्य वसन्तक, यह क्या है ?

विदूषक

यह-यह-य .... ।

पद्मावती

कहो, कहो, आर्य !

विदूषक

महाराज की आँखों में वायु से उड़ कर काँस के फूलों की रज जा पड़ी है, इसी से आँसू आगये हैं । लीजिए, यह मुँह धोने के लिए पानी है ।

पद्मावती

(स्वगत) अहा ! सदय-जनों के परिजन भी

सदय होते हैं। (अग्रसर होकर) आर्यपुत्र की जय हो। यह है मुँह धोने के लिए पानी।

राजा

अरे, पद्मावती! (अलग से) वसन्तक, यह क्या?

विदूषक

(कान में) यह बात है।

राजा

साधु वसन्तक, साधु! (मुँह धोकर) पद्मावती आओ।

पद्मावती

जो आज्ञा।

(बैठती है)

राजा

पद्मावती,

जो ये शारदीय-शशि से सित काश-कुसुम हैं मनभाये,
उड़ते हुए रजः कण इनके आँखों में आँसू लाये।

(स्वगत)

यह नूतन विवाहिता बाला सच सुन कर दुख पावेगी,
धीरा है, पर सहज कातरा, नारी-प्रकृति न जावेगी।

विदूषक

महाराज, आज अपरान्ह-काल में मगधराज आपको आगे करके बन्धु-बान्धवों से भेंट करेंगे। सत्कार के बदले में सत्कार करने से ही प्रीति बढ़ती है। इसलिए आप उठिए।

राजा

बहुत ठीक। यह तो प्रथम कर्त्तव्य है।

(उठ कर)

सद्गुण के सम्मान के अधिकारी हैं भूरि।
पर दुर्लभ हैं लोक में उनके ज्ञाता सूरि॥

(प्रस्थान)

इति चतुर्थांक

पञ्चमाङ्क

(पद्मिनिका का प्रवेश)

पद्मिनिका

मधुरिके ! मधुरिके ! शीघ्र आ ।

(मधुरिका आती है)

मधुरिका

सखी, मैं यह आई । क्या करना होगा !

पद्मिनिका

अरी, क्या तू नहीं जानती कि राजकुमारी पद्मावती का माथा दुख रहा है ?

मधुरिका

हाय ! हाय !

पद्मिनिका

अरी शीघ्र जा। आर्या आवन्तिका को समाचार दे। राजकुमारी की पीड़ा की बात सुन कर वे स्वयं चली आयँगीं।

मधुरिका

सखी, वे क्या करेंगीं ?

पद्मिनिका

वे अपनी मधुर कथा-वार्त्ताओं से राजकुमारी का मन बहलावेंगीं।

मधुरिका

ठीक है। राजकुमारी की शय्या कहाँ लगाई गई है ?

पद्मिनिका

समुद्र-गृह में। तू शीघ्र जा। मैं भी स्वामी को संवाद देने के लिए आर्य वसन्तक को खोजती हूँ।

मधुरिका

ठीक है।

(जाती है)

पद्मिनिका

आर्य वसन्तक इस समय कहाँ होंगे ?

(विदूषक का प्रवेश)

विदूषक

आज महारानी वासवदत्ता के वियोग में पद्मावती के विवाह की वायु से महाराज की प्रेमाग्नि इस सुखमय मङ्गलोत्सव में और भी अधिक बढ़ रही है। तो मैं उनके पास चलूँ। (देखकर) अरे, यह पद्मिनिका है। पद्मिनिके, क्या समाचार हैं ?

पद्मिनिका

आर्य वसन्तक ! क्या तुम्हें नहीं मालूम कि राजकुमारी पद्मावती का माथा दुख रहा है !

विदूषक

सचमुच ! मुझे नहीं मालूम।

पद्मिनिका

तो स्वामी को समाचार दो। तब तक मैं भी लेप आदि की व्यवस्था करूँ।

विदूषक

पद्मावती की शय्या कहाँ लगाई गई है ?

पद्मिनिका

समुद्र-गृह में।

विदूषक

तो तू जा। मैं भी महाराज को संवाद देता हूँ।

(प्रस्थान)

इति प्रवेशक

(राजा का प्रवेश)

राजा

काल-क्रम से मैंने फिर भी पाणि-ग्रहण किया है,
पाई बहु गुणवती सुन्दरी पद्मावती प्रिया है,
तदपि आग में जली हुई वह वासवदत्ता प्यारी,
याद आ रही है यों मानों नलिनी हिम की मारी।

(विदूषक का प्रवेश)

विदूषक

महाराज, शीघ्र चलिए, शीघ्र चलिए।

राजा

किसलिए ?

विदूषक

देवी पद्मावती का माथा दुख रहा है।

राजा

किसने कहा ?

विदूषक

पद्मिनिका ने।

राजा

हाय !

पूर्व शोक की रुकी नहीं यद्यपि क्रिया,
फिर भी पद्मावती सदृश पाकर प्रिया,
प्राप्त हुआ था धैर्य तनिक इस योग से,
वह भी पीड़ित सुनी जा रही रोग से ।

पद्मावती इस समय कहाँ हैं ?

विदूषक

उनकी शय्या समुद्र-गृह में लगाई गई है ।

राजा

तो वहीं चलो ।

विदूषक

आइए, आइए ।

(दोनों घूमते हैं)

विदूषक

यही समुद्र-गृह है । भीतर जाइए ।

राजा

पहले तू चल ।

विदूषक

बहुत अच्छा। (प्रवेक करके) अरे, अरे, ठहरिए, आप वहीं ठहरिए।

राजा

क्यों ?

विदूषक

यहाँ एक साँप है ! दिये के उजाले में स्पष्ट दिखाई दे रहा है।

राजा

(प्रवेश करके और देखकर हँसता हुआ) मूर्ख, इसी को तू साँप समझता है !

लम्बी भू पर पड़ी तरल यह तोरण-माला,
समझ रहा है भ्रान्त इसे तू विषधर काला।
मन्द पवन से बार बार लहराती है यह,
निशा-योग में नाग-मात्र ठहराती है यह।

विदूषक

(अच्छी तरह देखकर) आप ठीक कहते हैं।

यह साँप नहीं है। (भीतर जाकर देखकर) जान पड़ता है देवी पद्मावती यहाँ आकर चली गईं।

राजा

वे अभी यहाँ आईं ही नहीं !

विदूषक

आपने कैसे जाना !

राजा

इसमें जानने की क्या बात है, देख—

शय्या सम है, हुई न नीची, चादर सीधी तनी हुई,
लगे बिना लेपादिक तकिया है उज्वल ही बनी हुई,
रोगी के विनोद की कोई सामग्री भी नहीं अभी,
पाकर शयन रुग्ण-जन उसको सहज छोड़ता नहीं कभी।

विदूषक

तो आप इसी शय्या पर बैठ कर थोड़ी देर देवी की प्रतीक्षा कीजिए।

राजा

अच्छी बात। (बैठ कर) मित्र, मुझे नींद आ रही है। कोई कहानी सुनाओ।

विदूषक

मैं कहानी कहता हूँ । आप हूँ का दीजिए ।

राजा

अच्छा ।

विदूषक

उज्जयिनी नाम की एक नगरी है । वहाँ बड़े सुन्दर सुन्दर उपवन हैं ।

राजा

मित्र, तू ने फिर उज्जयिनी की बात छेड़ी ।

विदूषक

यदि यह कहानी आपको अभीष्ट न हो तो मैं दूसरी कहता हूँ ।

राजा

मित्र, यह बात नहीं । परन्तु—

करता हूँ मैं याद अवन्ती राज-सुता की,
गमन समय आत्मीय जनस्मृति शोच युता की ।
आँखों में उस समय अहा ! आँसू भर आये,
मेरे उर पर गये प्रेमवश जो बरसाये ।

और—

शिक्षा में भी एक टक, प्यारी मुझे निहार ।
त्रस्त हस्त से शून्य में छेड़ा करती तार ॥

विदूषक

अच्छा, मैं दूसरी कहानी कहता हूँ । ब्रह्मदत्त नामक नगर में काम्पिल्य नाम का एक राजा था ।

राजा

क्या, क्या ?

विदूषक

ब्रह्मदत्त नामक नगर में काम्पिल्य नाम का एक राजा था ।

राजा

मूर्ख, राजा ब्रह्मदत्त और नगर काम्पिल्य, इस प्रकार कह ।

विदूषक

क्या राजा ब्रह्मदत्त और नगर काम्पिल्य ?

राजा

हाँ, ऐसा ही ।

विदूषक

तो ठहरिए, मैं इसे कण्ठ कर लूँ। राजा ब्रह्मदत्त, नगर काम्पिल्य। (कई वार कहता है) अच्छा, अब सुनिए। अरे, आप तो सो गये। इस समय बड़ी सर्दी है। मैं चादर ले आऊँ।

(प्रस्थान)

(आवन्तिका के वेष में वासवदत्ता और चेटी का प्रवेश)

चेटी

आर्ये, आइए, आइए। राजकुमारी सिर की पीड़ा से बहुत दुखी हैं।

वासवदत्ता

हाय! उनकी शय्या कहाँ है?

चेटी

समुद्र-गृह में।

वासवदत्ता

तो आगे आगे चल।

(दोनों घूमती हैं)

चेटी

यही समुद्र-गृह है। आर्या प्रवेश करें। तब तक मैं लेपादि ले आऊँ।

(प्रस्थान)

वासवदत्ता

अहो, दैव बड़ा कठोर है। विरह-कातर आर्य-पुत्र को विश्वास रूपिणी पद्मावती भी अस्वस्थ होगई। मैं उसके पास चलूँ। (प्रवेश करके और देख कर) अहो, परिजन बड़े असावधान हैं, ऐसी अवस्था में भी पद्मावती को केवल दिये के सहारे छोड़ गये। पद्मावती यह सो रही है। तो यहीं बैठूँ। परन्तु अलग बैठने से स्नेह की अल्पता प्रकट होती है, इसलिए शय्या पर ही बैठूँ। इसके साथ बैठने से आज मेरा हृदय पुलकित-सा क्यों हो रहा है? अहा, इसकी श्वास अविच्छिन्न भाव से सुखपूर्वक चल रही है। जान पड़ता है रोग निवृत्त होगया। ये शय्या के एक किनारे पर सो रही हैं, मानों मुझे साथ लिटाने की इच्छा से आधी

मेरे लिए छोड़ दी है। तो मैं भी लेट जाऊँ।

(शयन करती है)

राजा

(स्वप्न में) हा, वासवदत्ते !

वासवदत्ता

(सहसा चकित होकर) दैया रे ! ये तो आर्यपुत्र हैं, पद्मावती नहीं। क्या इन्होंने मुझे देख लिया ? तब तो हाय, आर्य यौगन्धरायण का महान् प्रतिज्ञा-भार निष्फल हुआ।

राजा

हा ! अवन्ति राजपुत्रि !

वासवदत्ता

अहा, आर्यपुत्र तो स्वप्न देख रहे हैं। यहाँ कोई नहीं है। तो मैं क्षण भर ठहर कर अपने मन और नयनों को संतुष्ट कर लूँ।

राजा

हा प्रिये, हा प्रिय शिष्ये, बोलो।

वासवदत्ता

बोलती हूँ, नाथ, बोलती हूँ।

राजा

क्या कुपित हो ?

वासवदत्ता

नहीं, नहीं, दुःखित हूँ।

राजा

यदि कुपित नहीं हो तो तुम्हारे शरीर पर अलंकार क्यों नहीं ?

वासवदत्ता

इतने पर भी अलंकार ?

राजा

क्या विरचिका का स्मरण करती हो ?

वासवदत्ता

(रोष पूर्वक) जाओ, जाओ, यहाँ भी विरचिका।

राजा

तो विरचिका के लिए मैं तेरे हाथ जोड़ता हूँ।

(हाथ फैलाता है)

वासवदत्ता

बहुत विलम्ब होगया । कोई देख लेगा । इस लिए अब जाऊँ । परन्तु आर्यपुत्र का नीचे लटका हुआ हाथ शय्या पर रखती जाऊँ ।

(वैसा ही करके जाती है)

राजा

(सहसा उठकर) वासवदत्ते, ठहर, ठहर ! हाय !

सहसा जाने में मुझे लगा कपाट कठोर,
इससे कह सकता नहीं, सच कि स्वप्न था घोर ।

(विदूषक का प्रवेश)

विदूषक

अहा, आप जाग उठे !

राजा

मित्र, एक प्रिय संवाद सुनाऊँ । वासवदत्ता जीवित है ।

विदूषक

वासवदत्ता ! हाय वासवदत्ता ! वासवदत्ता तो कभी की गत हो गईं।

राजा

मित्र, ऐसा मत कहो।

सोते से वह मुझे जगाकर,
चली गई मैं रहा ठगा कर।
रुमण्वान ने मुझे छला है,
उसका पट तक नहीं जला है।

विदूषक

हां, यह तो असम्भव है। मैंने आपसे उज्जयिनी की चर्चा की थी इसी कारण महारानी की चिन्ता करने से वे आपको स्वप्न में दिखाई दी होंगी।

राजा

ऐसा ! मैंने स्वप्न देखा है !

था सचमुच यह स्वप्न तो धन्य स्वप्न का जाल,
भ्रम हो तो यह भ्रम मुझे बना रहे चिरकाल।

विदूषक

मित्र, यहाँ अवन्ति सुन्दरी नाम को एक यक्षिणी रहती है तुमने उसी को देखा होगा।

राजा

नहीं, नहीं।

मैंने उसे जागकर देखा,
न थी दृगों में अंजन-रेखा।
रखती हुई चरित्र महत्ता,
विशालाक्षी वासवदत्ता।

मित्र और भी—

किया प्रिया ने सभय जो मेरा बाहुस्पर्श,
जगने पर भी इस समय मिटा न उसका हर्ष।

विदूषक

यह व्यर्थ की चिन्ता छोड़िए। आइए, चतुःशाला में चलें।

(कंचुकी का प्रवेश)

कंचुकी

आर्यपुत्र की जय हो। हमारे महाराज दर्शक ने

आपसे कहलाया है कि आपका अमात्य रुमण्वान बड़ी भारी सेना लेकर आरुणी का वध करने के लिए आया है । और हमारे हाथी, घोड़े, रथ और पैदल भी विजय के लिए प्रस्तुत हैं। इसलिए आप उठिए ।

अनुरागी हैं और समाश्वासित पुरवासी,
रिपुओं में छा रही भिन्नता और उदासी ।
चुने जा चुके दृष्ट-रक्षि जन सभी हमारे,
अरि-विनाश के योग्य हुए आयोजन सारे ।
सेना सकुशल भागीरथी पार कर चुकी है तथा
हैं सभी आपके हाथ में, जय निश्चित है सर्वथा ।

राजा

(उठकर) ठीक है ।

हय गज से तरणीय समर-सागर को तर कर,
उठा रहे हैं तरल तरंगें जिसमें शर वर ।
दारुण-कर्मा महा क्रूर उस आरुणि का अब,
निश्चय ही मैं नाश करूँगा, देखेंगे, सब ।

(प्रस्थान)

इति पञ्चमाङ्क

षष्ठाङ्क

(कंचुकी का प्रवेश)

कंचुकी

सोने के तोरण द्वार पर कौन है ?

(प्रतीहारी का प्रवेश)

प्रतीहारी

आर्य, मैं हूँ विजया। कहिए, क्या काम है ?

कंचुकी

पुनः वत्सदेश की राज्य-प्राप्ति से विशेष उदय को प्राप्त हुए महाराज उदयन से जाकर निवेदन करो कि महाराज महासेन के यहाँ से रैभ्यस-गोत्र नामक कंचुकी आया है, और महारानी अङ्गारवती की भेजी हुई आर्या वसुन्धरा नाम की देवी वासवदत्ता की धात्री भी आई हैं। दोनों द्वार पर खड़े हैं।

प्रतीहारी

आर्य, इस समय निवेदन करने का अनुकूल अवसर नहीं है।

कंचुकी

क्यों नहीं है ?

प्रतीहारी

आज शय्या-सुख-प्रासाद के चौक में किसी ने वीणा बजाई। उसे सुन कर महाराज ने कहा कि यह घोषवती वीणा का स्वर है।

कंचुकी

तब ?

प्रतीहारी

तब महाराज ने जाकर पूछा, "यह वीणा कहाँ से आई ? उसने कहा कि हमने इसे नर्मदा के किनारे एक झाड़ी में पाया है। यदि महाराज की इच्छा हो तो यह उनकी भेंट है। उसे अङ्क में लेकर महाराज मूर्च्छित होगये। फिर चेत में आने पर आँसू गिराते हुए महाराज विलाप करने लगे—

'घोषवती ! तू तो मिल गई, पर वह नहीं दिखाई देती'-" आर्य यही बात है। आपका समाचार कैसे निवेदन करूँ ?

कंचुकी

निवेदन करो। यह समाचार भी उसी से सम्बन्ध रखता है।

प्रतीहारी

आर्य, जो आज्ञा। ये महाराज शय्या-सुख-प्रासाद से उतर रहे हैं। यहीं निवेदन करूँ।

कंचुकी

हाँ, ऐसा ही करो।

(दोनों का प्रस्थान)

इति विष्कम्भक

(राजा और विदूपक का प्रवेश)

राजा

श्रुति-मधुर-रवे, तू प्रिया-वक्ष पर रहती,
गोदो में लेटी कथा उसी की कहती।
खग-धूलि-धूसरित विरह दाव से दहती,
कैसे दारुण वनवास रही फिर सहती !

हाय, घोषवती ! तू बड़ी निर्मम है, उस बेचारो का तनिक भी स्मरण नहीं करती । वह तो,

कर पार्श्व पीड़ित अङ्क में सप्रेम भरती थी तुझे,
वक्षस्थली के स्वेद-रस से सिक्त करती थी तुझे ।
उद्देश कर मुझको विरह में वह बजाती थी तुझे,
संयोग में मधुरस्वरों से फिर सजाती थी तुझे ।

विदूपक

महाराज, बहुत संताप न कीजिए ।

राजा

मित्र, क्या करूँ ?—

घोपवती ने याद दिलाई,
बीती घटना आगे आई ।

है जिसकी यह प्यारी वीणा,
हाय, कहाँ वह प्रिया प्रवीणा !

वसन्तक, जा शिल्पिओं से इसे ठीक करा कर शीघ्र ले आ।

विदूषक

जो आज्ञा, महाराज।

(वीणा लेकर जाता है)

(प्रतीहारी का प्रवेश)

प्रतीहारी

महाराज की जय हो। महाराज महासेन के यहाँ से कंचुकी रैभ्यस गोत्र और महारानी अङ्गारवती की भेजी हुई वासवदत्ता की धात्री आर्या वसुन्धरा द्वार पर उपस्थित हैं।

राजा

तो देवी पद्मावती को बुला लाओ।

प्रतीहारी

जो आज्ञा।

(जाती है)

राजा

महाराज महासेन ने कितने शीघ्र यह वृत्तान्त जान लिया !

(पद्मावती और प्रतीहारी का प्रवेश)

प्रतीहारी

आइए, राजकुमारी, आइए ।

पद्मावती

आर्यपुत्र की जय हो ।

राजा

पद्मावती, तुमने सुना, महाराज महासेन के यहाँ से कंचुकी रैभ्यस गोत्र और महारानी अङ्गारवती की भेजी हुई वासवदत्ता की धात्री आर्या वसुन्धरा द्वार पर खड़ी हैं ।

पद्मावती

आर्यपुत्र ! अपने बन्धु-बान्धवों का कुशल-समाचार सुनने की मुझे बड़ी अभिलाषा है ।

राजा

तुमने अपने अनुरूप ही बात कही कि वासवदत्ता

के स्वजन मेरे ही स्वजन हैं। पद्मावती, आओ, बैठती क्यों नहीं ?

पद्मावती

आर्यपुत्र क्या मेरे साथ बैठकर उनसे मिलेंगे ?

राजा

इसमें दोष क्या है ?

पद्मावती

आर्यपुत्र ने फिर से विवाह किया है यह देखकर वे उदास न हों।

राजा

मिलने के योग्य जनों से न मिलना शिष्टाचार के विरुद्ध है। इसलिए आओ।

पद्मावती

आर्यपुत्र की जो आज्ञा। (बैठ कर) आर्यपुत्र, पिता और अम्बा ने क्या कहा होगा—यह जानने के लिए मैं बड़ी उद्विग्न हूँ।

राजा

पद्मावती, मैं भी यही सोचता हूँ।

हा, क्या कहा होगा उन्होंने, हो रहा यह सोच है,
उनकी सुता लाकर न रक्षित रख सका संकोच है।
मैं डर रहा हूँ यों कि ज्यों अपराध कर विधि-दोष से,
गुण-शील-युत सुत चित्त में डरता पिता के रोष से।

पद्मावती

जिसका समय आ गया है उसकी रक्षा कौन कर सकता है!

प्रतीहारी

महाराज, धात्री और कंचुकी द्वार पर खड़े हैं।

राजा

शीघ्र ले आओ।

प्रतीहारी

जो आज्ञा।

(जाती है और कंचुकी और धात्री को लेकर आती है)

कंचुकी

हर्ष होता है मुझे सम्बन्धि-राज्य विलोक,
नृपसुता की याद कर फिर जागता है शोक।

शत्रुकृत अपहृत न होता राज्य जो हे दैव !
कुशल युत देवी अहो, रहतीं अवश्य तथैव ।

प्रतीहारी

आइए, आइए, महाराज ये हैं ।

कंचुकी

(समीप जाकर) आर्यपुत्र की जय हो ।

धात्री

महाराज की जय हो ।

राजा

(सम्मान पूर्वक) आर्य,

उदय-अस्त तक नृपकुल-कर्त्ता,
प्रजा वर्ग के अनुपम भर्त्ता,
मेरे प्रिय बान्धव सुख दायक,
कुशल सहित तो हैं नरनायक ।

कंचुकी

महाराज, महासेन कुशल पूर्वक हैं और यहाँ आप सब लोगों की कुशल पूछते हैं ।

राजा

(आसन से उठकर) महाराज महासेन की क्या आज्ञा है।

कंचुकी

वैदेही-पुत्र के योग्य ही यह शिष्टाचार है। महाराज आसन पर बैठकर महासेन का सन्देश सुनें।

राजा

जैसी महाराज महासेन की आज्ञा।

(बैठता है)

कंचुकी

प्रसन्नता की बात है कि शत्रुओं से हरण किया गया राज्य फिर प्राप्त होगया।

कातर और अशक्त, निरुत्साह रहते सदा,
उद्यम में अनुरक्त, राज्यश्री हैं भोगते।

राजा

आर्य, यह सब महासेन का ही प्रभाव है।

सुत सह लालन किया प्रथम मुझको जय करके,
मैं रक्षित रख सका न उनकी कन्या हरके।

मृत सुनकर भी उसे नहीं नाता तोड़ा है ;
राज्य दिलाया मुझे कहूँ जो कुछ थोड़ा है।

कंचुकी

यह महाराज का संदेशा हुआ। महारानी का संदेशा आर्या वसुन्धरा कहेंगी।

राजा

हा अम्ब !

सोलह रनवासों में ज्येष्ठा,
पुण्या-पुरदेवी-सी श्रेष्ठा।
मेरा जिन्हें प्रवास सताता,
कुशल सहित तो हैं वे माता।

धात्री

स्वामिनी कुशल पूर्वक हैं। और आप सबकी कुशल पूछती हैं।

राजा

कुशल ? मा ! ऐसी कुशल है ! (आँसू पोंछता है)

धात्री

महाराज, अधिक संताप न कीजिए।

कंचुकी

आर्यपुत्र, धैर्य धारण कीजिए। जिन पर महाराज की ऐसी अनुकम्पा है वे महासेन की पुत्री मर कर भी नहीं मरीं।

कौन बचा सकता है उसको काल जिसे तकता है,
रस्सी टूटे हुए घड़े को कौन रोक सकता है।
एक नियम वन और लोक का सदा दृष्टि आता है,
समय समय पर कटना उगना होता ही जाता है।

राजा

आर्य, ऐसा न कहिए।

महासेन की सुता दुलारी
देवी मेरी शिष्या प्यारी,
देहान्तर गत हुई, इसी से
क्या मैं उसे भुला दूँ जी से।

धात्री

महारानी ने कहा है कि वासवदत्ता तो गई; किन्तु हमारे और महाराज के लिए जैसे गोपालक और पालक हैं वैसे ही तुम हो। इसी कारण तुम्हें

उज्जयिनी बुला कर अग्नि को साक्षी किए बिना ही वीणा की शिक्षा के बहाने वासवदत्ता को तुम्हारे हाथ में सौंपा था। किन्तु तुम्हारी ही चंचलता के कारण विवाह का मंगलोत्सव सम्पन्न न हो सका। तब तुम्हारी और वासवदत्ता की प्रतिमूर्ति चित्र में अंकित कराकर विवाह किया गया। उसी चित्रपट को तुम्हारे पास भेजती हूँ, जिसमें तुम उसे देखकर शान्ति-लाभ करो।

राजा

अहो! यह स्निग्ध और मधुर बात उन्हीं के अनुरूप है—

सौ राज्यों से भी अधिक प्रिय है यह सन्देश,
मुझ दोषी पर भी रहा उनका प्रेम विशेष।

पद्मावती

आर्यपुत्र, मैं चित्रांकित गुरुजनों का दर्शन और अभिवादन करना चाहती हूँ।

धात्री

देखिए, देखिए, राजकुमारी। (चित्रपट दिखलाती है)

पद्मावती

(देखकर स्वगत) अरे ? यह तो सर्वथा आर्या आवन्तिका जैसी दिखाई पड़ती हैं। (प्रकट) आर्य-पुत्र ! क्या यह ठीक आर्या की ही आकृति है ?

राजा

ठीक क्या, सर्वथा उन्हीं की है।

हा, ऐसे प्रिय रूप पर वह आपत्ति कराल,
कैसे मुख माधुर्य यह जला सकी वह ज्वाल।

पद्मावती

आर्यपुत्र की छवि देखने से मुझे ज्ञात हो जायगा कि यह ठीक आर्या की आकृति है या नहीं।

धात्री

राजकुमारी, देखिए, देखिए।

पद्मावती

(देखकर) आर्यपुत्र की प्रतिकृति देखकर जान पड़ता है कि आर्या का चित्र भी ठीक है।

राजा

देवी, चित्रपट देखकर तुम हर्षित और उद्विग्न सी कैसी होगई ?

पद्मावती

आर्यपुत्र, इस चित्र की अनुहार यहीं है।

राजा

क्या वासवदत्ता के चित्र की ?

पद्मावती

हाँ।

राजा

तो उसे शीघ्र बुलाओ।

पद्मावती

आर्यपुत्र, मेरे विवाह के पहले किसी ब्राह्मण ने अपनी बहिन बता कर उसे मेरे पास थाती के रूप में रक्खा था। वह प्रोपित-पतिका पर-पुरुष का दर्शन नहीं करती। उसे मेरे साथ देखकर आर्यपुत्र सब जान लेंगे।

राजा

भगिनी है यदि विप्र की तो होगी वह और,
रूप-तुल्यता लोक में मिलती है बहु ठौर ।

(प्रतीहारी का प्रवेश)

प्रतीहारी

आर्यपुत्र की जय हो । वह उज्जयिनी का ब्राह्मण राजकुमारी से अपनी बहिन की थाती लेने के लिए द्वार पर उपस्थित है ।

राजा

क्या यह वही ब्राह्मण है ?

पद्मावती

सम्भव है ।

राजा

उसे शिष्टाचार पूर्वक ले आओ ।

प्रतीहारी

जो आज्ञा । (गई)

राजा

पद्मावती, तुम भी उसे ले आओ ।

पद्मावती

आर्यपुत्र की जो आज्ञा। (गई)

(प्रतीहारी के साथ यौगन्धरायण का प्रवेश)

(स्वगत) यौगन्धरायण

देवी को था छिपा दिया मैंने नृप-हित ही,
उनके कल्याणार्थ किया था यह समुचित ही,
कार्य-सिद्धि भी हुई दैव ने दिन फिर फेरे,
फिर भी है यह सोच क्या कहेंगे प्रभु मेरे ।

प्रतीहारी

आर्य, आइए, स्वामी ये हैं।

यौगन्धरायण

(पास जाकर) आपकी जय हो।

राजा

अरे, यह स्वर तो सुना हुआ-सा है। हे ब्राह्मण, क्या तुम्हीं ने अपनी बहिन को धरोहर के रूप में पद्मावती को सौंपा था ?

यौगन्धरायण

हाँ, महानुभाव।

राजा

इनकी बहिन को शीघ्र ले आओ ।

प्रतीहारी

जो आज्ञा । (गई)

(पद्मावती, आवन्तिका और प्रतीहारी का प्रवेश)

पद्मावती

आर्ये, आओ, आओ, तुम्हें प्रिय समाचार सुनाऊँ ।

आवन्तिका

क्या, क्या ?

पद्मावती

तुम्हारे भाई आये हैं ।

आवन्तिका

भाग्य से मुझे नहीं भूले ।

पद्मावती

आर्यपुत्र की जय हो । यही वह थाती है ।

राजा

पद्मावती, साक्षियों के सामने धरोहर लौटाना

चाहिए। यहाँ आर्य रैभ्य और आर्या वसुंधरा की उपस्थिति में ही यह कार्य सम्पन्न करो।

धात्री

(आवन्तिका को देखकर) अरे, यह तो राजकुमारी वासवदत्ता है।

राजा

महासेन पुत्री!—देवी, तुम पद्मावती के साथ भीतर जाओ।

यौगन्धरायण

नहीं, नहीं यह तो मेरी बहिन है।

राजा

आप क्या कहते हैं? यह तो इसे महासेन की पुत्री बताते हैं!

यौगन्धरायण

हे राजन्,

ज्ञानी शुद्ध विनीत, आप भरत वंशीय हैं।

राज धर्म विपरीत, उचित नहीं अनरीति यह।

राजा

अच्छा, तो मैं रूप सादृश्य देखूँ। घूँघट कम करो।

यौगन्धरायण

महाराज की जय हो।

वासवदत्ता

आर्यपुत्र की जय हो।

राजा

अरे! यह तो यौगन्धरायण! यह महासेन-पुत्री!

सच है अथवा यह स्वप्न अहा!
मैं पुनः प्रिया को देख रहा।
पहले भी मैं हूँ देख चुका,
हा! वंचित होकर किन्तु रुका।

यौगन्धरायण

महाराज, देवी को छिपाकर मैंने बड़ा अपराध किया है। मुझे क्षमा कीजिए।

(पैरों पर गिरता है)

राजा

(मंत्री को उठाकर) यौगन्धरायण ।

शास्त्र, नीति, रण-मंत्रणा, मिथ्योन्माद प्रचार,
अहो डूबने से हमें तुमने लिया उबार ।

यौगन्धरायण

हम लोग तो स्वामी के भाग्य के अनुगामी हैं ।

पद्मावती

अहो ! यह आर्या हैं ! आर्ये ! अनजाने में मैंने तुमसे सखी के समान व्यवहार किया है, इस अपराध के लिए तुम्हारे पैरों पर सिर रख कर क्षमा माँगती हूँ ।

वासवदत्ता

(पद्मावती को उठाकर) उठ, उठ, सौभाग्यवती ! तुझे अपराधी होना नहीं सोहता !

पद्मावती

मैं अनुगृहीत हुई ।

राजा

वन्धु, यौगन्धरायण, क्या विचार कर तुमने देवी को छिपा रक्खा था ?

यौगन्धरायण

केवल कौशाम्बी की रक्षा के लिए।

राजा

ठीक, परन्तु इसे पद्मावती के समीप रखने का क्या कारण ?

यौगन्धरायण

पुष्पक भद्रादि सिद्ध पुरुषों ने कहा था, कि राजकुमारी पद्मावती आपकी महारानी होंगीं।

राजा

तो रुमण्वान भी इस बात को जानता था ?

यौगन्धरायण

नाथ ! सभी जानते थे।

राजा

अहो, रुमण्वान भी बड़ा शठ है !

यौगन्धरायण

महाराज, देवी का कुशल समाचार सुनाने के लिए आर्य रैभ्य और आर्या वसुन्धरा को विदा कीजिए।

राजा

नहीं, नहीं। देवी पद्मावती के साथ हम सभी लोग चलेंगे।

यौगन्धरायण

जो आज्ञा।

(भरत वाक्य)

हिमगिरि और विन्ध्य जिसके हैं दो कुण्डल द्युतिमन्त,
सीमा है जिस हरी भरी की रत्नाकर पर्यन्त,
उस विशाल वसुधा का होकर प्रेमपात्र सर्वत्र,
रहे हमारा राजसिंह चिर-शासक एकच्छत्र।

पटाक्षेप

इति षष्ठाङ्क

—०—

हिन्दी में अपने ढँग की

सब से सस्ती और अनुपम

साहित्य-मणि-माला

यूरोप की उन्नत भाषाओं में ऐसी अनेक मालाएँ प्रकाशित होती हैं जिनके द्वारा जन साधारण को इतिहास, साहित्य, विज्ञान, ललित कला आदि जैसे गहन विषयों को सरल और सुबोध रूप में पाठकों के निकट पहुँचाने का प्रयत्न किया जाता है। हिन्दी में ऐसी एक भी माला प्रकाशित नहीं होती। इसी अभाव की पूर्ति के लिए हमने साहित्य-मणि-माला का आयोजन किया है। हमें आशा ही नहीं वरन् पूर्ण विश्वास है कि आप हमारे इस शुभ अनुष्ठान में हमारा हाथ बँटावेंगे। सर्व साधारण के हित के ख्याल से हमने यथाशक्ति माला का मूल्य कम रक्खा है। ८० से लेकर २०० पेज तक की सुन्दर सजिल्द, रैपर चढ़ी हुई पुस्तक का मूल्य केवल ॥=) होगा। तिस पर भी यदि आप बारह पुस्तकें एक साथ खरीदने की कृपा करेंगे तो डाक व्यय आदि का भार हम उठाने को तैयार हैं। हमारा आप से अनुरोध है कि आप ७॥) भेज कर इस अपने ढंग की एक मात्र पुस्तक माला के ग्राहक बनिए, और इस शुभ कार्य में हमें उत्साहित कीजिए। माला की प्रथम मणि—

झंकार

बढ़िया छपाई, सफाई और सजावट के लिहाज़ से ही नहीं वरन् विषय की दृष्टि से भी आप इसे सब तरह से अनुपम और खरी पायेंगे। यह हिन्दी के सुप्रसिद्ध कवि श्री मैथिलीशरणजी गुप्त की लिखी हुई अनुपम और अभूतपूर्व गीति-कविताओं का संग्रह है। इसके सम्बन्ध में इतना ही कहना यथेष्ट है।

अंकुर

लेखक—श्री कृष्णानन्द गुप्त। इसमें सुन्दर सुन्दर कहानियों का संग्रह है। लेखक कहानी-लेखन-कला में बहुत सिद्धहस्त हैं। इस पुस्तक की सभी कहानियाँ सरस, सुपाठ्य और सुरुचि सङ्गत हैं।

महाकवि भास विरचित

स्वप्न वासवदत्ता नाटक

पुस्तक आपके हाथ में है।

[महाकवि भास के अन्य सब नाटक भी शीघ्र ही इसी माला में प्रकाशित किये जायँगे]

माला की और भी कई पुस्तकें निकल रही हैं।

पता—प्रबन्धक,

साहित्य-सदन, चिरगाँव (झाँसी)

श्रीमैथिलीशरणजी गुप्त के काव्य-ग्रन्थ

भारत-भारती	मूल्य	१)	सजिल्द	१॥)
जयद्रथ-वध	,,	॥)	,,	१)
रंग में भंग	...		...	।)
शकुन्तला	...		...	।=)
किसान	...		...	।=)
पत्रावली	...		...	।–)
वैतालिक	...		...	।)
चन्द्रहास	...		(नाटक)	।॥)
तिलोत्तमा	...		,,	॥)
पंचवटी	...		...	।=)
अनघ	...		(गीति नाट्य)	।॥)
स्वदेश-संगीत	...		...	॥।)
त्रिपथगा	..		...	१॥)

त्रिपथगा=बक-संहार, वन-वैभव और सैरन्ध्री नामक तीनों काव्यों का संग्रह १॥), प्रत्येक काव्य अलग अलग छैः छैः आने में भी मिलते हैं ।

शक्ति	...		...	।)
हिन्दू	१)		विशिष्ट	१।)
गुरुकुल	...		...	२)
विकट-भट	...		...	=)